वैज्ञानिक साक्षरता और टेलीविजन की भूमिका

नवनीत कुमार गुप्ता
परियोजना अधिकारी (एडूसेट)
विज्ञान प्रसार
सी-24, कुतूब संस्थानिक क्षेत्र
नई दिल्ली-110016
ngupta@vigyanprasar.gov.in

आज हम विज्ञान एवं संचार के युग में जी रहे हैं। आज संचार के असंख्य माध्यमों ने इस युग को संचार युग बना दिया है। संचार के विभिन्न माध्यमों द्वारा हम विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी सहित विभिन्न क्षेत्रों में घटित होने वाली घटनाओं, आविष्कारों एवं नयी-नयी खोजों की जानकारी प्राप्त करते हैं।

जनसंचार के सबसे प्रभावी एवं लोकप्रिय माध्यम के रूप में टेलीविजन की विशेष पहचान है। आज संचार व मनोरंजन का नया और सशक्त माध्यम बनकर उभरा है। टेलीविजन इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर विभिन्न संस्थाओं द्वारा समाज में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को जाग्रत करने के लिए अनेक दृश्य कार्यक्रमों का निर्माण किया जा रहा है। इन दृश्य कार्यक्रमों को दूरदर्शन एवं अन्य चैनलों के माध्यम से आम जनता तक पहुँचा कर वैज्ञानिक चेतना के विकास में योगदान दिया जा रहा है।

विज्ञान संबंधी दृश्य कार्यक्रम समाज में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के प्रसार में उल्लेखनिय भूमिका निभा रहे हैं। दूरदर्शन के राष्ट्रीय चैनलों पर पिछले एक दशक से विज्ञान संबंधी कार्यक्रमों का प्रसारण हो रहा है। इसके अलावा लोकसभा टीवी एवं राज्यसभा टीवी पर भी विज्ञान कार्यक्रमों का नियमित प्रसारण किया जा रहा है।

आज अंग्रेजी के महत्वपूर्ण चैनल जैसे डिस्कवरी, एनीमल प्लेनेट, नेशनल ज्योग्राफी, हिस्ट्री चैनल आदि हिंदी सहित अनेक क्षेत्रीय भाषाओं में विज्ञान संबंधी कार्यक्रम प्रसारित कर रहे हैं। अनेक समाचार चैनल जैसे एनडीटीवी आदि भी पर्यावरण, नदी संरक्षण पर विशेष कार्यक्रमों का प्रसारण करते हैं।

विज्ञान प्रसार द्वारा निर्मित कार्यक्रमों का उद्देशय समाज में वैज्ञानिक सोच की प्रवृत्ति को प्रसारित करना है। विज्ञान विधि पर आधारित कार्यक्रमों में हल्का-फुल्का मनोरंजन और सूचनाओं का रोचक तरीके से प्रसार दर्शकों को कार्यक्रम से बांधे रखता है।

किसी भी दृश्य कार्यक्रम की गुणवत्ता प्रवाहपूर्ण भाषा शैली, तथ्यों का संतुलित एवं यर्थात प्रयोग, विषय-वस्तु को प्रस्तुत करने की क्षमता पर निर्भर करती है।

इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर निर्मित किए गए विज्ञान प्रसार के कार्यक्रमों 'विज्ञान- जवाबों में सवाल' , 'द मैक्थ फैक्टर', 'खुदबुदः विज्ञान के खेल', 'जो है जैसा, क्यों है वैसा?' 'कुछ तुक्के...कुछ तीर' - प्रयोग जिन्होंने दुनिया बदल दी, 'ऐसा ही होता है, 'जीतो रहो', 'चमत्कार', 'जिज्ञासा', 'नैनो की दुनिया', 'कहानी धरती की', 'तारों की सैर', 'हमारे खगोलीय पड़ौसीः कितने दूर-कितने पास, 'मुखौटे-सच का चेहरा', आदि को दर्शकों द्वारा काफी सराहा गया है।

विज्ञान प्रसार के स्वयं एवं डेक्, इसरो के साथ मिलकर विकसित किए गए अनेक कार्यक्रमों को दूरदर्शन के विभिन्न राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय चैनलों, लोकसभा टीवी, राज्यसभा टीवी पर प्रसारित किए जा रहे हैं। यहां विज्ञान प्रसार के कुछ कार्यक्रमों के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी जा रही है। जिनसे हमें कार्यक्रमों की रूपरेखा व उद्देश्य समझने में आसानी होगी।

1) विज्ञान धारावाहिक
ऐसा ही होता है
55 कड़ियों वाला धारावाहिक “ऐसा ही होता है“ विज्ञान प्रसार एवं डेक्/इसरो द्वारा संयुक्त रूप से निर्मित किया गया है। यह कार्यक्रम दूरदर्शन के राष्ट्रीय चैनल पर 2005 से 2006 के दौरान प्रत्येक रविवार सुबह 09.30 से 10.00 बजे प्रसारित हुआ था। इस धारावाहिक की प्रत्येक कड़ी किसी विशेष विषय जैसे पृष्ठ तनाव, घर्षण, चुंबकत्व एवं अन्य विषयों पर आधारित है। इस धारावाहिक की कुछ कड़ियों के अंत में पर्यावरण से संबंधित विभिन्न विषयों जैसे प्रदूषण, खाद्य श्रृंखला और जैवविविधता आदि पर दो मिनट की अवधि के एनिमिशन को दर्शकों द्वारा काफी सराहा गया। 55 कड़ियों का यह कार्यक्रम मन में उठने वाले अनेक सवालों को जैसे बस में ब्रेक लगने पर झट्का क्यों लगता है ?, वायुयान कैसे उड़ता है ?, गेंद स्पिन कैसे होती है ? आदि का जबाव देने में कामयाब रहा है।

जीते रहो

विज्ञान प्रसार द्वारा स्वास्थ्य पर आधारित 26 कड़ियों वाले कार्यक्रम जीते रहो का निर्माण डेकू, इसरो के साथ मिलकर किया गया। इस कार्यक्रम का प्रसारण दूरदर्शन से किया जा चुका है। एड्स, मधुमेह, टीकाकरण आदि स्वास्थ्य संबंधी विभिन्न मुद्दों को इस कार्यक्रम की मदद से समझाया गया है। इसमें एक 3डी केरेक्टर 'बब्लू बिंदास' ने दर्शकों का काफी आकर्षित किया। इस कार्यक्रम में स्वास्थ्य की महत्ता को दर्शाने के साथ ही अनेक गंभीर बीमारियों के लक्षण एवं उनसे बचाव के बारे में जानकारी प्रदान की गई।

चमत्कार

26 कड़ियों वाला कार्यक्रम ‘चमत्कार’ 2006 में दूरदर्शन पर प्रसारित किया जा चुका है। इस कार्यक्रम का निर्माण विज्ञान प्रसार ने डेकू, इसरो के साथ किया है। इसमें दैनिक जीवन में देखे जाने वाले विज्ञान के अनेक सिद्धांतों को मनोरंजक माध्यम से क्विज के रूप में प्रस्तुत किया गया था। यह कार्यक्रम आम जनता के साथ-साथ स्कूली बच्चों में काफी लोकप्रिय हुआ था। इस कार्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों में अपने आसपास विज्ञान से जुड़े सवालों पर चर्चाएं आरंभ हुईं।

नैनो की दुनिया

13 कड़ियों वाला धारावाहिक “नैनो की दुनिया“ विज्ञान प्रसार एवं डेक्, इसरो द्वारा संयुक्त रूप से निर्मित किया है। यह कार्यक्रम दूरदर्शन के राष्ट्रीय चैनल पर 2007-2008 के दौरान प्रत्येक रविवार को प्रसारित हुआ था। यह धारावाहिक नैनोप्रौद्योगिकी के नवीन आयामों पर आधारित था। ऐनिमेशन से भरपूर इस कार्यक्रम के द्वारा नैनोप्रौद्योगिकी के विभिन्न पहलुओं को रोचक ढंग से समझाया गया है। ‘नैनो की दुनिया’ कार्यक्रम में विज्ञान की नवीन शाखा की जानकारी को रोचकता एवं सरलता से समझाया गया।

कहानी धरती की

26 कड़ियों वाले कार्यक्रम ‘कहानी धरती की’ को विज्ञान प्रसार द्वारा अंतर्राष्ट्रीय पृथ्वी ग्रह वर्ष - 2008 के दौरान विकसित किया गया। इस कार्यक्रम में पृथ्वी ग्रह से संबंधित विभिन्न पहलुओं जैसे यहां के वातावरण, महासागरीय तंत्र एवं अनेक पारिस्थितिकी तंत्रों जैसे पहाड़, जंगल, नदी आदि के अलावा जलवायु परिवर्तन के संकट एवं इनसे निपटने के लिए किए जा सकने वाले प्रयासों को भी शामिल किया गया है। इस कार्यक्रम में जलवायु परिवर्तन एवं प्रदूषण के खतरों को दर्शाते हुए धारणीय विकास की महत्ता को दर्शाया गया है।

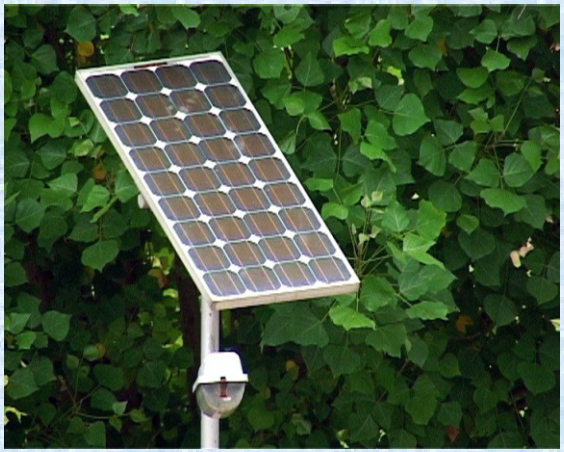

तारों की सैर

विज्ञान प्रसार द्वारा निर्मित 26 कड़ियों वाला कार्यक्रम ‘तारों की सैर’ खगोलविज्ञान से संबंधित अनेक पहलुओं को उजागर करता है। यह कार्यक्रम विज्ञान प्रसार द्वारा अंतर्राष्ट्रीय खगोल विज्ञान वर्ष -2009 के अवसर पर निर्मित किया गया था जिसका प्रसारण 2009-2010 के दौरान दूरदर्शन से किया जा चुका है। इस कार्यक्रम द्वारा खगोल विज्ञान से संबंधित अनेक प्रश्नों जैसे; इस अनन्त ब्रम्हांड में हम कहां हैं और कहां से आए हैं, रात को आकाश में चकमने वाले तारे क्या हैं, चंद्रमा को ग्रहण क्यों लगता है, उसकी कलाएं क्या हैं, हम ब्रम्हांड में कहां तक पहुँच सकते हैं, यह ब्रम्हांड कैसे अस्तित्व में आया, सौर मंडल कैसे बना आदि को समझाने का प्रयास किया गया। प्रत्येक धारावाहिक में ‘स्वयं कर सकें’ जैसी गतिविधि भी धारावाहिक को आकर्षक बनाती हैं।

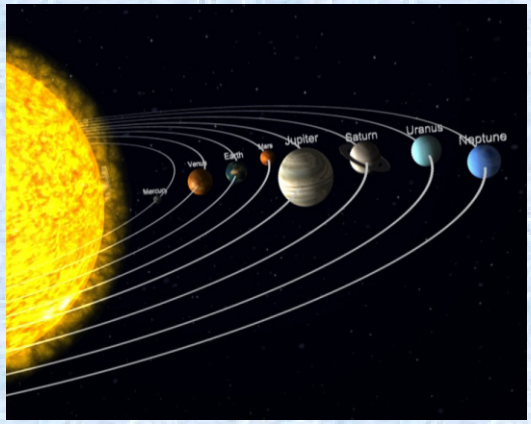

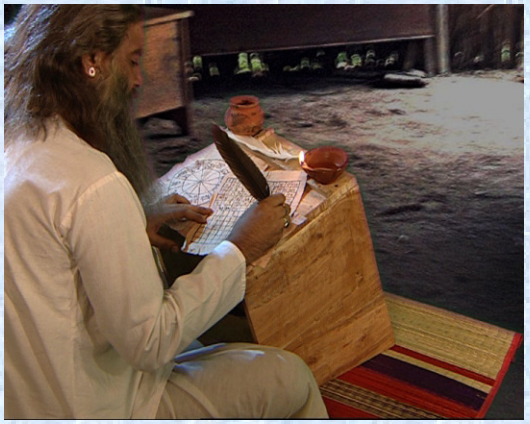

कुछ तुक्के...कुछ तीरःप्रयोग जिन्होंने दुनिया बदल दी
विज्ञान के क्षेत्र में हुए क्रांतिकारी प्रयोगों पर विज्ञान प्रसार द्वारा निर्मित 26 कड़ियों वाला धारावाहिक "'कुछ तुक्के...कुछ तीरः प्रयोग जिन्होंने दुनिया बदल दी" की प्रत्येक कड़ी किसी विशेष प्रयोग जैसे एक्स-रे विकिरणों की खोज, हरित गृह प्रभाव की खोज, सूक्ष्मअणुओं की खोज, पेनिसिलिन की खोज, मार्गन के प्रयोग, संज्ञानात्मक विज्ञान का विकास, हरित क्रांति, रक्त समुहों की खोज, टीकाकरण की खोज, वायुदाब के मापन की खोज, सेमीकन्डेटर की खोज, ब्रम्हांड के मापन संबंधी प्रयोगों आदि पर आधारित है। इस धारावाहिक दवारा विद्यार्थियों में वैज्ञानिकों द्वारा किए गए प्रयोगों की प्रक्रिया एवं परेशानियों को समझा। इस धारावाहिक में विज्ञान की खोजों में छिपी वैज्ञानिक विधि को समझाने का प्रयास किया है। इस धारावाहिक ने विद्यार्थियों को वैज्ञानिकों के जीवन एवं उनके कार्यों से परिचित कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

खुदबुदः खेल विज्ञान के

विज्ञान प्रसार द्वारा निर्मित 52 कड़ियों का यह कार्यक्रम देश के विद्यालयों और समुदायों में फिल्माया गया है। इस कार्यक्रम में गांवों और कस्बों के विभिन्न विद्यालयों के बच्चों ने विज्ञान को खेल के रूप में सीखा। इसमें बच्चों को उनकी सोच को विकसित करने का प्रयास किया गया है। इसमें विज्ञान को पाठ्यपुस्तकों या परिभाषाओं तक सीमित न रखते हुए खेल के माध्यम से इस प्रकार व्यक्त किया गया है जहां तर्कसंगत सोच, प्रयोग और विचार करने की स्वतंत्रता है। असल में खुद यानी स्वयं और बुद यानी मस्तिष्क, इस प्रकार खुदबुद का मतलब निरंतर विचारों के जन्म लेने और जिज्ञासु प्रवृत्ति से है। खुदबुद का उद्देश्य विज्ञान को लोकप्रिय करने के साथ ही विज्ञान विधि को मुख्य तौर पर बढ़ावा देना है। इसमें बच्चों को लक्ष्यित करके रचनात्मकता और स्वयं करने की क्षमता का विकास करने को बढ़ावा दिया गया है। खुदबुद के माध्यम से करके सीखो वाली भावना के विकास पर ध्यान केंद्रित किया गया है। इस धारावाहिक के विद्यार्थियों को विज्ञान के विभिन्न सिद्धांतों जैसे पृष्ठ तनाव, घनत्व, वायुदाब, घर्षण, चुम्बकत्व, विद्युत चालकता, आदि से संबंधित विभिन्न प्रयोग रोचक तरीके से कराए गए।

विज्ञान- जवाबों में सवाल

विज्ञान से जुड़ी उत्सुकता और जवाबों की खोज इस धारावाहिक की मुख्य विषय-वस्तु है। ये 26 भाग वाली ऐसी श्रृंखला है जो विभिन्न भारतीय विज्ञान प्रयोगशालाओं और तकनीकी केन्द्रों में हो रही सबसे रोमांचक और अतिउन्नत शोध तथा नई खोजों को दिखाती है। इस श्रृंखला का उद्देश्य दर्शकों के इस सवाल का जवाब देना है कि भारत में विज्ञान और तकनीकी क्षेत्रों में क्या हो रहा है? इस धारावाहिक की हर कड़ी हमारा परिचय शोधकर्ताओं के ऐसे समूहों से कराती है जो विज्ञान से जुड़ी किसी बड़ी समस्या को सुलझाने की कोशिश कर रहे हैं। इसमें कई क्षेत्रों को छुआ गया है, जिनमें आनुवंशिक विज्ञान, अणु भौतिकी, वन्य जीवन संरक्षण से रेडियो ब्रम्हांड, जैव प्रौद्योगिकी से लेकर खेती में हो रही नई खोजें शामिल हैं। यानी इस श्रृंखला में भारत के वैज्ञानिक परिदृश्य के हर पहलू का जायजा लिया गया है।

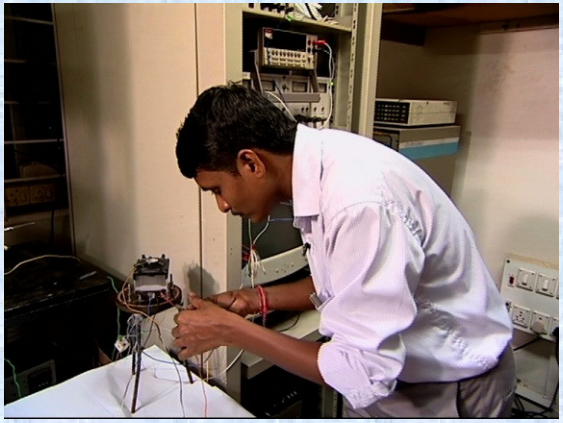

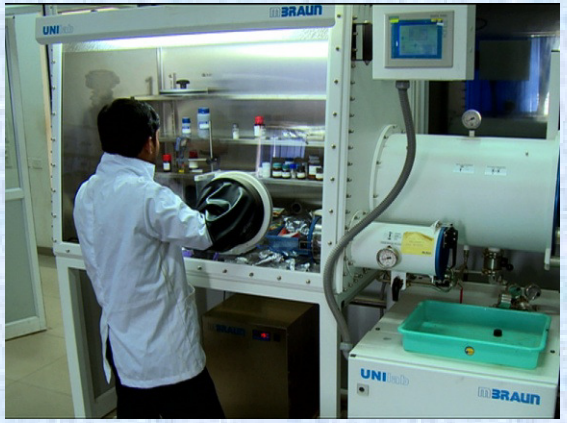

द मैक्थ फैक्टर

विज्ञान प्रसार द्वारा निर्मित 13 कड़ियों का दृश्य धारावाहिक 'द मैक्थ फेक्टर' कार्यक्रम गणित के विभिन्न पहलुओं को दर्शाता है। इस धारावाहिक की प्रत्येक कड़ी गणित के किसी क्षेत्र की रोचक संकल्पना और यात्रा पर केंद्रित है जिसमें ऐतिहासिक संदर्भों एवं नवाचारों का भी जिक्र किया जाता है। पाठयपुस्तकों जैसी सामग्री से मुक्त यह श्रृंखला दर्शकों में काफी लोकप्रिय साबित हुई।

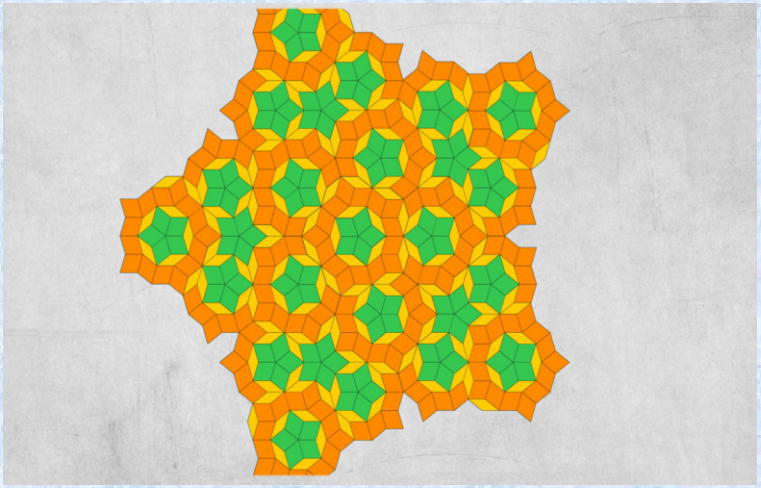

जो है जैसा, क्यों है वैसा?

विज्ञान प्रसार द्वारा रसायन विज्ञान पर निर्मित 13 कड़ियों वाला धारावाहिक 'जो है जैसा...क्यों हैं वेसा?' रसायन विज्ञान के विकास की यात्रा कराता है। यह धारावाहिक हमारे दैनिक जीवन में रसायनों के उपयोग से लेकर औद्योगिक युग के विकास में रसायनों की भूमिका पर प्रकाश डालता है। यह धारावाहिक रसायन विज्ञान के क्षेत्रों में हुए क्रांतिकारी परिवर्तनों से दर्शकों को रूबरू कराता है। इस धारावाहिक के माध्यम गया है। इस धारावाहिक के माध्यम से हरित रसायन विज्ञान की महत्ता एवं उपयोगिता से दर्शकों को परिचित कराने का प्रयास किया गया है। से स्वास्थ्य, कृषि, उद्योग, नैनोप्रौद्योगिकी, जैवरासायनिकी एवं हरित रसायन विज्ञान आदि विभिन्न क्षेत्रों में रसायन विज्ञान के महत्व को दर्शया

समसामायिक विज्ञान समाचारों पर आधारित दृश्य कार्यक्रमः 'ज्ञान-विज्ञान' एवं 'साइंस दिस विक'

विज्ञान प्रसार द्वारा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की नवीनतम उपलब्धियों पर विज्ञान समाचारों पर आधारित कार्यक्रम का प्रसारण किया जा रहा है। विज्ञान की नवीनतम घटनाओं की जानकारी देने का प्रयास करने वाला यह कार्यक्रम अपनी तरह का देश का पहला विज्ञान कार्यक्रम है। विज्ञान प्रसार द्वारा इस कार्यक्रम के माध्यम से हमारे देश में विज्ञान की प्रयोगशालाओं में होने वाली खोजों एवं अनुसंधानों के साथ ही पर्यावरण, स्वास्थ्य, जैव प्रौद्योगिकी, सूचना तकनीकी आदि से संबंधित नयी-नयी गतिविधियों से जनमानस को अवगत कराने का प्रयास किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में विज्ञान साहित्य पर चर्चा, वैज्ञानिकों के साक्षात्कार, आकाश दर्शन से संबंधित रोचक जानकारियों का समावेश, विज्ञान पर्यटन के साथ विज्ञान संबंधी समसामायिक घटनाओं का ब्यौरा दिया जाता है।

वृत्तचित्र

विज्ञान प्रसार द्वारा भारतीय वैज्ञानिकों जैसे जे.सी.बोस, पी.सी रे, एस. चन्द्रशेखर के अलावा अनेक महान वैज्ञानिकों जैसे अल्बर्ट आइंस्टीन, चालर्स डार्विन के जीवन एवं कार्यों पर वृत्तचित्रों का निर्माण किया गया है। विज्ञान प्रसार के अलावा राष्ट्रीय विज्ञान संग्राहालयों और राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद् सहित अनेक विश्वविद्यालयों द्वारा भी वैज्ञानिकों पर वृत्तचित्रों का निर्माण किया गया है। इन वृत्तचित्रों के द्वारा वैज्ञानिकों के संघर्ष, उनकी कार्य विधि और सबसे प्रमुख विज्ञान विधि को समझा जा सकता है जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण की अहम कड़ी है। विज्ञान प्रसार द्वारा निर्मित किए गए वृत्तचित्रों में वैज्ञानिकों के कार्यों, उनकी असफलताओं-सफलताओं को मुख्य रूप से प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाता है। विज्ञान प्रसार द्वारा अब तक भारतीय वैज्ञानिकों की जीवनियों, पीसी महालोबनिस, पीसी वैद्य, प्रौफेसर यशपाल, जीएन रामचन्द्रण, प्रोफेसर ए के रायचैधरी, अल्बर्ट आंइस्टीन, प्रोफेसर बीएल सरार्फ आदि पर वृत्तचित्रों का निर्माण किया है।

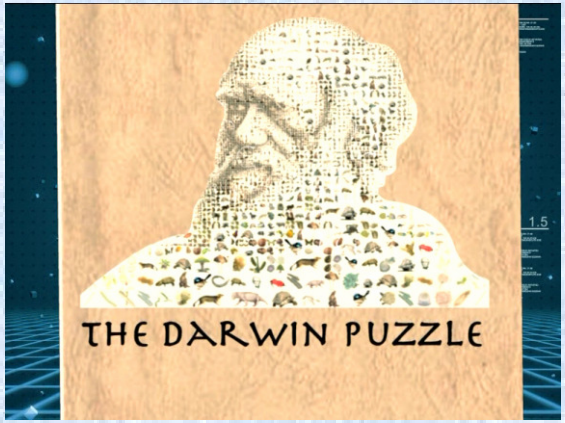

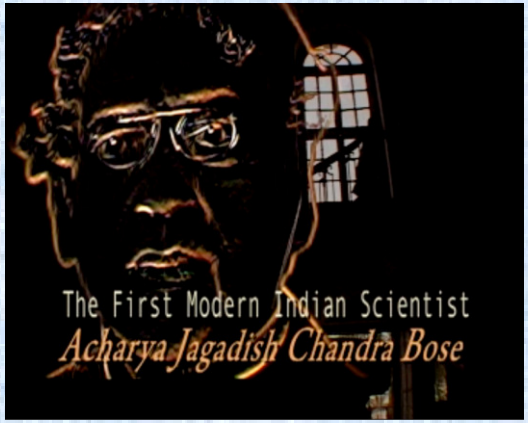

समसामायिक परिघटनाओं पर आधारित दृश्य कार्यक्रम

विज्ञान प्रसार सहित अनेक संस्थाओं द्वारा अनेक समसामायिक विषयों जैसे सूर्य ग्रहण एवं शुक्र पारगमन पर भी दृश्य कार्यक्रमों का निर्माण किया गया है ताकि जनमानस इन प्राकृतिक परिघटनाओं को समझ सकें। इस प्रकार विज्ञान प्रसार अपने दृश्य कार्यक्रमों के द्वारा समाज में ऐसी खगोलीय घटनाओं से संबंधित प्रचलित अंधविश्वासों की सच्चाई सामने लाता है। इस प्रकार विज्ञान प्रसार समसामायिक परिघटनाओं पर आधारित दृश्य कार्यक्रम का निर्माण कर जनमानस में उन घटनाओं के प्रति जागरूकता का प्रयास कर रहा है। विज्ञान प्रसार सहित ऐसी ही अन्य संस्थाओं के प्रयासों का नतीजा है कि हमारे देश में भी अब ग्रहण या पारगमन जैसी घटनाओं को अंधविश्वास से मुक्त होकर करोड़ों लोग देखते और समझने का प्रयास करते हैं।

सितंबर, 2014 में भारत के मंगलमिशन पर अनेक चैनलों ने विशेष कार्यक्रम प्रस्तुत किए। इस अवसर पर राज्यसभा टीवी ने एक महीने तक भारतीय विज्ञान की उपलब्धियों पर कार्यक्रमों का प्रसारण किया जिसमें विभिन्न वैज्ञानिकों विषयों पर वैज्ञानिकों के साक्षात्कार एवं समुह चर्चाओं का प्रसारण किया गया।

क्षेत्रीय भाषाओं में प्रसारित होने वाले विज्ञान प्रसार के दृश्य कार्यक्रम

विज्ञान प्रसार ने अपने अनेक विज्ञान कार्यक्रमों को भारत की प्रमुख 10 भाषाओँ (मराठी, गुजराती, कन्नड़, मलयालम, उर्दू, आसामी, तमिल, तेलगू, पंजाबी, उड़िया) में रूपांतरित रूप में उपलब्ध कराया है। इन डब कार्यक्रमों को दूरदर्शन के क्षेत्रीय चैनलों द्वारा प्रसारित किया जा रहा है।

विज्ञान संबंधी दृश्य कार्यक्रमों की विशेषता

विज्ञान संबंधी दृश्य कार्यक्रमों का सबसे प्रमुख उद्देशय वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करना होता है। इसके लिए कार्यक्रमों को रोचक ढंग से प्रस्तुत करना होता है। इस क्रम में कार्यक्रमों की स्क्रिप्ट, उनके प्रस्तुतिकरण, एनिमेशन एवं ग्राफिक्स पर विशेष ध्यान दिया जाता है। कार्यक्रमों की स्क्रिप्ट इस प्रकार विकसित की जाती है जिससे विज्ञान के गूढ रहस्यों को भी आसानी से समझा जा सके। इसके लिए सटिक उदाहरणों का सहारा लेते हुए तुलनात्मक ढंग से वैज्ञानिक तथ्यों को सरलता से समझाया जाता है। इसके अलावा पाठकों के फीडबैक से भी अवगत होकर कार्यक्रमों को और उन्नत बनाया जाता है। इस प्रकार पाठक और कार्यक्रम के रिश्तों की प्रगाढ़ता कार्यक्रम के उद्देश्य को पूरा करने में सफल होती है। आधुनिक कार्यक्रमों में वैज्ञानिक व्याख्याओं, एनोलाजी और अतिउन्नत एनिमेशन के माध्यम से विज्ञान को जीवंत बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

विज्ञान संबंधी कार्यक्रमों में सामाजिक मान्यताओं, प्रचलित धारणाओं, देशकाल आदि का भी ध्यान रख जाना चाहिए ताकि दर्शक किसी भी बात को तुलनात्मक रूप से समझ सके। इस प्रकार विज्ञान संबंधी दृश्य कार्यक्रमों के माध्यम से वैज्ञानिक खोजों के इतिहास, पर्यावरण की सुरक्षा करने, स्वास्थय के प्रति सजग रहने एवं नवीन तकनीकों एवं प्रौद्योगिकियों के बारे में जानकारी प्रदान करते हुए वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास पर बल दिया जाता है।

वैज्ञानिक साक्षरता में टेलीविजन की भूमिका

टेलीविजन न केवल मनोरंजन का बल्कि शिक्षा का भी सशक्त माध्यम है। सर्वप्रथम इसरो ने 'साईट' परियोजना के माध्यम से टेलीविजन का उपयोग शिक्षा के लिए करने के प्रयास किया। धीरे-धीरे टेलीविजन का उपयोग मनोरंजन के लिए होने लगा। लेकिन कुछ ही दिनों में समझ में आया कि मनोरंजन के साथ-साथ वैज्ञानिक साक्षरता के लिए टेलीविजन बेहतर माध्यम बन सकता है। इसीलिए टर्निंग पाईंट, भारत की छाप, मंथन, ऐसा ही होता है जैसे कार्यक्रम बनें। आगे चलकर डेकू, इसरो एवं विज्ञान प्रसार सहित विश्वविद्यालयों द्वारा टेलीविजन के लिए विज्ञान संबंधी कार्यक्रम बनाए जिनके द्वारा वैज्ञानिक साक्षरता का प्रयास हुआ। टेलीविजन द्वारा वैज्ञानिक विषयवस्तु को सरलता, रोचकता और ग्राफिक्स, एनिमेशन के माध्यम से प्रस्तुत किया जाना इसका सबसे बड़ा आकर्षण है।

अन्य माध्यमों की तुलना में टेलीविजन का प्रभाव जनमानस पर अधिक दिखाई देता है। इसके अलावा टेलीविजन एक साथ बहुत अधिक लोगों तक भी पहुंचता है। यही कारण है कि आज सूर्यग्रहण, चंद्रग्रहण जैसी घटनाओं के पीछे विज्ञान को आबादी का एक बड़ा वर्ग टेलीविजन के माध्यम से समझ सका है। आज हिग्स बोसान के बारे में लोग जानते हैं। असल में टेलीविजन द्वारा वैज्ञानिक तथ्यों को आसानी से जनमानस के मध्य प्रस्तुत किया जा सकता है। इसीलिए वैज्ञानिक साक्षरता के प्रसार में टेलीविजन की भूमिका महत्वपूर्ण है।